समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 19 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

नेहरू वंश ने किया देश की सुरक्षा से खिलवाड़

—तरूण विजय

जनस्मृति बहुत क्षीण हेती है। जो कांग्रेसी आज कह रहे हैं कि देश उनकी वजह से आजाद हुआ, उन्हें बताना चाहिए कि उनकी वजह से देश बंटा। आजाद हुआ तो सुभाष बोस और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारीयों के कारण जो कभी कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण नहीं रहें। 15 अगस्त, 1947 को खंडित एवं निर्दोष भारतीयों के रक्त से स्नात भारत अभी संभला भी न था कि सितंबर में पाकिस्तान ने हमला किया और फिर चीन ने अक्साईचिन हड़प लिया। नेहरू के कारण भारत नें 1.25 लाख वर्ग कि. मी. भूमि पाकिस्तान और चीन के हाथों जाने दी। मुझे आश्चर्य होता है कि 70 वर्ष बीत गए लेकिन कभी नेहरू वंशीय कांग्रेस को कठघरे में खड़ा कर यह सवाल नही पूछा गया कि स्वतंत्र भारत की सवा लाख वर्ग कि.मी. जमीन जो चीन और पाकिस्तान के हाथों गंवा दी गई, उसके बारे में कांग्रेस पार्टी ने कितने प्रस्ताव पारित किए, कितने चुनाव घोषणापत्रों में उस भूमि को वापस लेने का संकल्प व्यक्त किया। यह तो केवल अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में सीमा विवाद को चर्चा के माध्यम से हल करने के लिए आयोग बनाया गया। वरना कांग्रेस इसे तो 'भूला हुआ विषय' मान बैठी थी। नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में भारतीय जनसंघ के प्रथम अध्यक्ष डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी का श्रीनगर में रहस्यमय परिस्थिति में देहांत हुआ। इस पर लोकसभा में चर्चा करते हुए अटल बिहारी वाजपेयी ने उसे नेहरू–शेख अब्दुल्ला दुरभिसन्धि से हुई 'हत्या' कहा था। नेहरू की चीन के साथ मायावी मित्रता का भारत को बहुत बड़ा खामियाजा भुगतान पड़ा। 1948 में भारत को सुरक्षा परिषद् की सदस्यता मिल रही थी, लेकिन कम्युनिस्ट चीन से मित्रता के लोभ में नेहरू ने न केवल राष्ट्रसंघ की सदस्यता हेतु उसका समर्थन किया, बल्कि सुरक्षा परिषद की सीट दिलवाई। 1962 में और तैयारी ऐसी कि जवानों के पास न तो सर्दी के जूते और न जुराबें, और न ही हथियार। जनरल कौल की अक्षमता और नेहरू की अव्यावहारिक नीति ने नेफा और लद्दाख में चीनी शिकंजे को कसने दिया और नेहरू ने हारे हुए मन से ऑल इंडिया रेडियों से असम के तेजपुर, निवासियों को 'विदा' ही दे दी थी। उस युद्ध में भारतीय सेना जीती, मेजर शैतान सिंह का शौर्य, राइफलमैन जसवंत सिंह रावत का पराक्रम रक्त से लिखी गौरव गाथा है। स्वतंत्र भारत का पहला भ्रष्टाचार कांड 'जीप घोटाला' नाम से कुख्यात है। पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला कर दिया था, सेना के पास जीपें नहीं थी। तुरंत किसी भी कीमत पर जीपें खरीदने का आदेश दिया गया। तब लंदन में भारतीय उच्चायुक्त टी.टी. कृष्णमाचारी थें। विली मार्का जीपें खरीदी गई। युद्ध समाप्त होने के 18 माह बाद जीपें आई। संसद उस कांड से हिल उठी थी। यह भी नेहरू की देन है। हिंदु मन और हिंदू जीवन पद्धति से इतनी घृणा कि नेहरूवाद वस्तुतः अहिंदूवाद में तब्दील हो गया। तत्कालीन मीडिया पर नेहरू का इतना एकाधिकारवादी शिकंजा था कि नेहरू समर्थक विचार के अलावा और कुछ छपता ही न था। यही कारण रहा कि रा.स्व.संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री म. स. गोलवलकर ने देश की विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीयता के विचारों को महत्व देने वाली पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को आरंभ करवाया। कांग्रेस ने कभी राष्ट्र द्वारा सम्मानित एवं जन–मन में लोकप्रिय कांग्रेसी नेताओं को अपनी 'नक्षत्र–धारा का अंग नही बनाया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार पटेल, पुरूषोतम दास टण्डन, डॉ. सम्पूर्णनंद, मा. मुंशी, लाल बहादुर शास्त्री जैसी अनेक विभूतियां केवल प्रखर राष्ट्रीयता के भाव के कारण जनप्रिय हुई एवं उन्हें असीम जन–सम्मान मिला परंतु नेहरू वंशीय कांग्रेसी नेतृत्व ने उन्हें नकार दिया। उन्हें कभी भी नेहरू–गांधी खानदानी नेतृत्व के समकक्ष सम्मान नहीं दिया। नेहरू–गांधी वंश के नेतृत्व ने न केवल भारत की भूमि शत्रुओं के हाथों गंवायी, बल्कि भ्रष्टाचार को संस्थागत रूप दिया। जीप घोटाला, मूंधड़ा घोटाला, बीमा घोटाला, नागरवाला कांड, ललित नारायण मिश्र हत्याकांड, कश्मीर समस्या का जन्म, धारा 370 लगाना, जम्मू–कश्मीर को दूसरे ध्वज की अनुमति, विदेशी धन और मन पर पले कम्युनिस्टों से दोस्ती और देशभक्त रा.स्व.संघ पर प्रतिबंध, आपात्काल लगाकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कुचलना और लोकतंत्र के प्रहरियों पर अमानुषिक अत्याचार, बोफर्स घोटाला, पनडुब्बी घोटाला, 2 जी, 3 जी घोटाला.... यह सूची अनंत है। यह सब केवल और केवल नेहरू–गांधी वंशजों के सत्तासुख के लिए देशभर पर किए गए आघात हैं। इस देश की राजनीतिक काया भले ही सेकुलर राजनीतिकी हो, लेकिन भारत का मन शुद्ध, प्रबुद्ध हिंदू है। कांग्रेस ने इस हिंदू मन पर आघात किए। हिंदूबहुल देश में हिंदू धर्मावलंबियों के प्रति कांग्रेस के नेहरूवंशीय नेतृत्व की वितृष्णा और दुष्ट–दृष्टि सदैव प्रभावी रही। इसी के विरूद्ध जनमानस में जिस राष्ट्रीयताके प्रबल प्रवाह का उद्रेक हुआ, उसने नेहरू कांग्रेस को हाशिए पर ठिठकी पाल–कुश्ती में बदल दिया है। जो जहा जाती हे वहीं कांग्रेस का भविष्य सुखाती है। इसी के लिए एक शायर ने लिखा था– तेरे लब ये हैं, इराके शामों मिस्त्रों रोमों चीं (चीन) लेकिन अपने ही वतन के नाम से वाकिफ नही।

बोफोर्सः गैर कानूनी भुगतान की जानकारी राजीव गॉधी को थी

नई दिल्ली. राजीव गॉधी सरकार के कार्यकाल के दौरान हुये बोफोर्स घोटाले के 31 साल बाद नया खुलासा हुआ हैं। एक टीवी चैनल ने स्वीड़न के पूर्व मुख्य जांच कर्ता स्टेन लिंडस्टोन से बातचीत के टेप रिलिज किये हैं। चैनल के समक्ष जांचकर्ता ने तीन दावे किये हैं। पहला कि राजीव गॉधी बोफोर्स ड़ील में गैर कानूनी तरीके से हुये भुगतान के बारे में जानते थे। दूसरा, राजीव ने स्वीड़िश प्रधानमंत्री से एक विमान में भुगतान के बारे में चर्चा की थी और तीसरा राजीव चाहते थे कि बोफोर्स डील के बदले स्चीडिश पीएम को फण्ड दिये जाये। जॉचकर्ता के मुताबिक, दलाली की रकम 64 करोड़ से कही ज्यादा थी। उल्लेखनीय हैं कि सेना के 410 तोपें खरीदने के लिये 1.3 अरब डॉलर की डील 1986 में हुई थी। इसमे इटली के कारोबारी ओटावियो क्वात्रोच्चि को बड़ी दलाली दी गई थी।

पकिस्तान आतंकी देश है

अतंतः अमेरिका ने भी इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि पाकिस्तान एक आतंकी देश है। अमरिका ने उसे आतंक को शह देने वाला देश घोषित कर दिया है। अमेरिका के विदेश मंत्रालय ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में इस तथ्य को मान लिया है कि वर्ष 2016 में पाकिस्तान से लश्कर–ए–तैयबा और जैश–ए–मुहम्मद जैसे खूँखार आतंकी संगठनों ने न सिर्फ आतंक मचाया, बल्कि अपना संगठन खड़ा किया और उसके लिये धन भी जुटाया। पाकिस्तान ने सन् 2016 में लश्कर–ए–तैयबा और जेश–ए–मुहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के माध्यम से दूसरे देश (भारत) पर हमले कराने में पूरा जोर लगा दिया। आकड़ों से यह बात साफ हो जाती है कि आतंकवाद से प्रभावित भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा देश है। सन् 2016 में भारत में 927 हमले हुयें थे। इससे ज्यादा आतंकी हमले उस साल सिर्फ इराक (2965) और अफगानिस्तान (1340) में हुये थे। भारत तो एक लम्बे समय से पाकिस्तान की इस प्रकार की चालबाजियों और कुकृत्य से परेशान रहा ही है। अब आकर अंतराष्ट्रीय समुदाय की चिन्ता भी बढ़ने लगी है। अमरीकी संसद के एक पैनलने अपनी जमीन पर आतंकी गतिविधियों को रोक पाने में असफल होने पर पाकिस्तान को दी जाने वाली मदद पर रोक लगाने का समर्थन किया है। अमरीका इसके पहले ही हिज्बुल–मुजाहिदीन, जैश–ए–मुहम्मद हककानी नेटवर्क आदि को आतंकी सूची में शामिल कर चुका है। पाकिस्तान में जिन संगठनो ने आतंकी धटनाओं को अंजाम दिया है, वे पहले पाकिस्तानी खुफिया संगइन आई.एस.आई की छत्र छाया में पालित–पोषित हैं। आतंकी गुटों के ठिकानों और उनकी गतिविधियों की जानकारी होते हुये भी पाकिस्तान सरकार कोई कार्रवाई नही करती।

जरूरत है इस्लामी उन्माद को ललकारने की इस लक्ष्य को नजर अंदाज किया जाना धातक ही सिद्ध हुआ है कि न केवल घाटी में वरन् अन्य क्षेत्रों में भी तेजी के साथ मस्जिदों, मदरसों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इससे ज्यादा चिन्ता की बात यह है कि इनमें सिर्फ कट्टरपंथ का पाठ पढ़ाया जाता है। यहॉ दाखिल बच्चों के मन में कथित उन्मादी भावनाओं को ठूँस–ठूँस कर भरा जाता है जिनका प्रदर्शन घाटी में तो आये दिन होता ही रहता है। सलाफी सोच और घाटी में अलगाववाद पाकिस्तानी सहयोग और प्रोत्साहन का परिणाम है। इसे अब नकारा भी नही जा सकता। भले ही सेकुलर मीडिया इस पर पर्दा डालता रहे और उस सच्चाई को देश के सामने आने नही देता। इसे पाखंड और दोमुहापन न कहें तो क्या कहें? अमरनाथ यात्रा पर हमला इस्लामी आतंकियों ने किया है, पर सेकुलर नेता और मीडिया इस सच से मुँह चुराते रहे। इसे हवा देने वाला समाज में एक समूह और है जो अपने आप को मानवतावादी कहलाने में गर्व करता है जो समाज में नया वैचारिक प्रदूषण फैला रहा है। में तथा कथित मानवतावादी किस मॉढ में छिप जाते हैं जब कश्मीर मे सेना के जवानों पर पत्थर और गोलियॉ बरसायी जाती हैं। सरे आम बंगाल में सैकड़ो हिन्दुओं के घरों मं आग लगा दी जाती है, मंदिरों को तोड़ा जाता है। चार लाख कश्मीरियों को घाटी से बलात् हॅकाला गया तब इनकी जवान क्यों नहीं खुली ?

ये मानवता वादी पाखंडी ही है। इनसे समाज को और देश को सचेत रहना चाहिये। अब तक कश्मीर के लोग ऐसे मानवतावादियों और अलगाववादियों के झाँसे में आकर अपना अहित ही करते रहते हैं। अभरनाथ यात्रियों पर अभी हाल का आतंकी हमला असहनीय पीड़ा देने वाला है। ऐसे इस्लामी आतंक के विरूद्ध सामाजिक लड़ाई का शंखनाद भी घाटी से ही होना चाहिये। ताकि घाटी और कश्मीरियत दोनों ही बची रहे। हालॉकि घाटी से हिन्दुओं के निवसिन् उत्पीड़न और निर्मल हत्याओं के कारण कश्मीरियत दागदार तो हो ही गयी है। जरूरत है इस्लामी उन्माद को ललकाने की।

आजादी के बाद भारत की सीमायें घटी

कभी इराक, ईरान, नेपाल, अफगानिस्तान, ब्रम्हदेश (म्यॉमार) श्रीलंका, भूटान और इंडोनेशिया सहित अन्य अनेक इलाके भारत का हिस्सा थे। जब भारत अंग्रेजों द्वारा शासित हुआ उस समय भारत का कुल भौगोलिक भू–भाग 83 लाख वर्ग किलोमीटर से ज्यादा क्षेत्र में फैला हुआ था लेकिन जब उन्हे भारत छोड़कर जाना पड़ा तब क्षेत्रफल सिकुड़कर महज 33 लाख वर्ग किलोमीटर रह गया। आजादी के बाद भारत के 1.74 लाख वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर चीन, पाकिस्तान, बॉग्लादेश और म्यामॉर का अवैध कब्जा है। पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दुओं के साथ ही हजारा और अहमदिया समुदाय के मुस्लिमों के साथ भी क्रूरता का व्यवहार किया जा रहा है। वही, दूसरी तरफ पाकिस्तान का आधा हिस्सा होने के बाद भी बलूचिस्तान को व्यवस्था से पूरी तरह से काट दिया गया है। भारत के साथ एक–दो नही, बल्कि सात देशो की सीमांए लगती है, जिनमें चीन भी शामिल है। सीमा पर विवाद चीन के साथ भी चलता ही रहता है, लेकिन दोनों की आपसी लड़ाई कभी इस स्तर पर नही आती कि कूटनयिक या द्विपक्षीय बैठकों, बातचीत और व्यवहार तक पर उसका सीधा असर पड़ने लगे। दोनो अंतराष्ट्रीय मंचों पर अपनी बात रखते हैं। बयानबाजी भी होती है, लेकिन ऐसी तल्खी नही। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि जब चीन संयुक्त राष्ट्र में भारत की एनएसजी में दावेदारी का विरोध कर रहा था, उसी समय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी चीन का शांतिपूर्ण और संपूर्ण शिष्टाचार से भरपूर दौरा करके आए। लेकिन जरा भारत और पाकिस्तान की बानगी देखिए। जहर उगलती जुबानों के बीच केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह सार्क देशों के गुह मंत्रियों के सम्मेलन में हिस्सा लेने इस्लामाबाद पहुंचे तो आलम यह हो गया कि उन्हें बिना किसी शिष्टाचार के वापसी उड़ान भरनी पड़ी। खास बात यह है कि पाकिस्तान ने यह रवैया तब भी अपनाया, जबकि भारत के प्रधानपंत्री शिष्टाचार या प्रोटोकॉल को दरकिनार करते हुए पाक प्रमुख नवाज शरीफ के जन्मदिन पर मुबारक कहने अचानक पहुंच गए थें। अपने खोखले अंहकार का प्रदर्शन करके पाकिस्तान ने क्या जाहिर किया है, यह किसी से छिपा नही है। उसके अशिष्ट व्यवहार से यही जाहिर हुआ कि पाकिस्तान को आपसी रिश्तों की गरिमा और सबसे बढ़ कर कूटनयिक औपचारिकता ध्यान रखने का शऊर भी नही हे। दरअसल कसूर नवाज शरीफ का भी कम ही है। अपने देश में भी उन्हे कठपुतली स्थिति वाले प्रधानमंत्री के तौर पर ही देखा जाता है। पाकिस्तान में कहने को सत्ता का एक लोकतांत्रिक ढ़ांचा है। लेकिन असल में इसकी कमान तो देश की सेना और खुफिया एंजेसी आएएसआई के हाथ में

शेष पृष्ठ क्रमांक 3 पर

साधना स्थली है संघ शिक्षा वर्ग का प्रशिक्षण

प्रत्येक वर्ष गर्मी की छुट्टियों में संघ 20 दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग आयोजित करता है। इस बार अनेक स्थनों पर में ये वर्ग लगाए गए। इस लेख में प्रस्तुत है वर्ग सम्बंधी जानकारी –

वर्ग परिसर है साधना स्थली

लगातार 20 दिन तक प्रातः 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक की पूर्व नियोजित कठोर दिनचर्या का पालन, सीमित साधनों के साथ सादगीपूर्ण सामूहिम जीवन का अभ्यास, राष्ट्रभक्ति और सेवा के संस्कारों से ओत–प्रोत वातावरण, परम वैभव का स्वप्न संजोए मां भरती की सेवा करने के योग्य स्वयं को बनाने की प्रेरणा लेकर संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक एक शिक्षार्थी की भूमिका में देशकार्य के लिए साधना करता है। अपने निजी कार्य जैसे अपने बर्तन धोना, कपड़े धोना अपने परिसर की सफाई आदि के कार्य स्वयं करना हैं। अपने भोजन, किराया, गणवेश आदि का खर्चा स्वयं वहन करके उसे 'देश मेरा, मैं देश के लिए' के भावों की अनुभूति करवाता है। भयंकर गर्मी के वातावरण में भी सुबह–शाम चार घंटे के शारीरिक कार्यक्रमों के साथ चर्चा, संवाद व बौद्धिक सत्र उसके व्यक्तित्व में निखार लाते हैं। सारा दिनक्रम एक निश्चित दिनचर्या के अनुसार चलता है।

संघ शिक्षा वर्ग में समाज भागीदारी के कार्यक्रम

चपाती संग्रह :– 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में समाज जागरण में रोटी ने विशेष भूमिका इन संघ शिक्षा वर्गो में भी प्रतिदिन घरों से चपाती एकत्र की गई। जिससे न केवल समाज की आतिथ्य सत्कार की भावनाओं का प्रकटीकरण हुआ अपितु खाने वालों के मन पर ईश्वरीय प्रसाद ग्रहण करते हुए समरस समाज के संस्कार मजबूत हुए। प्रतिदिन दोपहर को एक गांव व रात्रि में नगर की एक बस्ती के घरों से वर्ग के लिए भोजन आता था। प्रत्येक घर से 20–20 चपातियॉ ली जाती थी जबकि दाल, सब्जी व चावल वर्गस्थान पर बनता था। इस प्रकार 1200 लोगों के लिए प्रतिदिन दो समय 10,000 चपातियां आती थी। **वर्ग दर्शन :–** में सामाजिक धार्मिक दृष्टि से समाज जीवन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले बन्धु–भगिनियों को वर्ग देखना चाहिये।

राष्ट्र निर्माण में स्वयंसेवकों को अद्वितीय प्रशिक्षण दे रहा है संघ– इन्द्रेश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार ने कहा कि संघ राष्ट्रनिमार्ण में स्वयंसेवकों को अद्वितीय प्रशिक्षिण दे रहा है। भारत में 75 हजार स्थानों पर तथा विश्व के 80 देशों में प्रतिदिन 8 लाख स्वयंसेवक तथा राष्ट्रीय सेविका समिति में 4 हजार स्थानों पर व विश्व के 15 देशों में 50 हजार सेविकायें साधना कर राष्ट्रनिर्माणके कार्य में लगी हुई है। इन्द्रेश कुमार ने कहा कि संघ एक सामाजिक संगठन है तथा देश की नींव को मजबूत करने के लिए कार्य कर रहा है। संघ की शाखा में देशप्रेम के भाव दिए जाते हैं। सामाजिक समानता के लिए संघ में छूआछूत को दूर रखा जाता है। आज के समय में भी प्रशासकों को भगवान श्रीकृष्ण से प्रेरणा लेकर देश के अंतिम व्यक्ति तक पहुचकर उनकी समस्या का निवारण करना चाहिए। नारी शिक्षा पर भी बल देते हुए हुए कहा कि प्रत्येक मनुष्य नारी की कोख से जन्म लेकर आया है तथा उसे नारी का सम्मान करना चाहिए। इसके लिए संघ भी निरंतर काम कर रहा है। साथ ही उन्होनें अयोध्या मेंराम मंदिर निर्माण तथा चीनी सामान के बहिष्कार का आह्वान भी किया। हमारे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो तथा प्रत्येक गरीब को भरपेट भोजन मिले,कोई भूखा न सोए एवं त्यौहारों को चीनी माल से मुक्त कर चीन को युद्ध के मार्ग से बुद्ध के मार्ग पर लाकर सबक सिखाएं ताकि भारतवर्ष एक बार फिर सोने की चिड़िया कहलाए।

बुनकरों के लिये मिशाल हैं अफसाना बानो

काशी के लाहता में रहने वाली अफसानाबानो आज बुनकरों के लिये प्रेरणा स्त्रोत हैं। हो भी क्यों न! उन्होने काम जो ऐसा किया है। कभी खुद के काम की तलाश में रहने वाली अफसाना 50 से भी ज्यादा महिलाओं को बुनकरी से जोड़कर काम दे रही हैं। 27 वर्षीय अफसाना ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं है लेकिन अपने हुनर और लगन के दम पर न केवल खुद के परिवार के पाल रही हैं बल्कि कई परिवारों को रोजगार देने का काम भी करती हैं। बे बताती हैं कि,''मायके में भी कई पीढ़ियों से यही काम चला आ रहा हैं। लेकिन हमारे पास पैसे नही थे जो हम कुछ अलग कर सकते। एक दिन लोहता में ही एक स्वयं सेवी संगठन द्वारा बुनकरों से जुड़ा कार्यक्रम हुआ। उस बैठक में मुद्रा लोन की चर्चा की गई। मैं इस बात को लेकर काशी के ड़ॉ., जो हम जैसे लोगों के उत्थान के लिये काम करते है, उनसे मिली। उन्होने मदद की और 2016 में बैंक से 50 हजार रूपये का मुद्रा लोन मिल गया। बस यही वह समय हैं हमारे जीवन में परिवर्तन आना शूरू हुआ। मैने इसी पैसे से अपना काम शूरू किया। आज मैं खुद बाजार से साड़ी लाने का काम करती हूँ। और महिलाओं को देकर काम कराती हूँ। और जब माल तैयार हो जाता है तो सीधे गद्दीदार को देते हैं। इससे बिचौलि को जो पैसा मिलता था वह बच जाता है और हम सबको फायदा होता हैं।'' वे मानती हैं कि पहले की सरकार में भी लोन लेने का प्रयास किया गया था लेकिन ऐसा नही हो पाया। पर भाजपा सरकार के आने बाद ही हमारा लोन पास हुआ हैं। हां, अभी बुनकरी के काम में बहुत सी तकलीफें हैं लेकिन अब धीरे–धीरे अब बदलाव आ रहे हैं।

मै हिन्दू राष्ट्र का पक्षधर हुँ : रॉड्रिग्ज

गोवा क्रांनिकल के संपादक सावियो रॉड्रिग्ज ने गोवा के रामनाथ देवस्थान में हो रहे छठे अखिल भारतीय हिन्दू अधिवेशन में हिन्दू राष्ट्र–स्थापना की दिशा विषय पर बोलते हुए कहा कि मै हिन्दुस्थानी हूँ और मुझे उसका अभियान है। मै ईसाई होकर भी हिन्दू राष्ट्र की मांग करने वाले इस अधिवेशन में उपस्थित हुँ।

पृष्ठ क्रं. 2 का शेष भाग

है। अक्सर ऐसी घटनाएं सामने आती रही है कि जब कोई सरकार अपने काम या बर्ताव से सेना के लगाम से बाहर जाती दिखती है तो किसी न किसी बहाने सेना को ढूंढ़ा जा सकता है। समूचे विश्व में पाकिस्तान अपनी उग्र नीतियों के लिए बदनाम है। खासतौर पर जब से अमेरिका ने पाकिस्तान में उसामा बिन लादेन को मार कर उसके आतंकियों और गैगस्टरों की पनाहगाह होने की आधिकारिक पुष्टि की है। एक शरारती बच्चे की तर्ज पर पाकिस्तान को यह लगता है कि विश्व का ध्यान भटकाने के लिए कोई और मुद्दा उठाया जाए।

परिवर्तन के पुरोधा

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ट प्रचारक श्री सीताराम केदिलाय द्वारा शूरू की गई भारत परिक्रमा यात्रा पिछले दिनों कन्याकुमारी में संपन्न हुई। 9 अगस्त 2012 को जब श्री केदिलाय ने कन्याकुमारी से भारत की परिक्रमा यात्रा की शूरूआत की थी तब अनेक चिंताये जगी थी, जैसे 68 वर्ष की अवस्था में प्रतिदिन 10–15 कि.मी. की यात्रा कैसै करेंगे ? आधुनिक समाज में पैदल यात्रा करने की क्या आवश्यकता है? लेकिन उन्होने इन सभी बातों को किनारे रखते हुये अपनी यात्रा प्रारंभ की थी। इस दौरान न तो वे कभी थके, न ही बीमार हुये और न ही रूके। बस अनवरत चलते रहे। श्री केदिलाय ने यात्रा के दौरान 20 राज्यों के 9,000 गांवों से होते हुये 26,650 कि.मी. की यात्रा तय की। यात्रा के समापन पर कन्याकुमारी में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन राव भागवत की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह वही स्थान है जहॉ पर स्वामी विवेकानंद जी ने शिकागों के लिये अपनी यात्रा की शुरूआत की थी। और इसी स्थान से सीताराम जी ने भारत परिक्रमा यात्रा की शूरूआत की। उन्होंने कहा कि गांव के विकास से ही भारत का विकास होगा। इस यात्रा से एक बात पता चली कि गांव–गांव जाकर ही एक महत्वपूर्ण परिवर्तन संभव हैं। हम जब भी कुछ नया करेंगे ता जीवन में समस्या तो आयेंगी। लेकिन हमें खुद ही उन समस्याओं को अच्छे कर्मो से हल करने का अभ्यास करना होगा। यह खुद के लिये भी अच्छा होगा और समाज के लिये भी। श्री भागवत जी ने कही की स्वार्थ, अहंकार, अभिमान को त्याग कर समाज एक साथ पग से पग मिलाकर चले, इससे ही राष्ट्र का विकास होगा। वेलीमलाई आश्रम के स्वामी श्री चैतन्यानंद महाराज ने कहा कि सीताराम जी की मंगलमय यात्रा पूर्ण हुई, इसके लिये समाज के प्रत्येक वर्ग को बधाई और शुभकामनाये। उन्होने कहा कि यह भारत पुण्यभूमि है। यहॉ कि विविधता और संस्कृति अनुपम है। लेकिन मीड़िया का एक वर्ग सदैव भारत की छवि को सदैव नराकात्मक रूप में प्रस्तुत करता रहता है, जो ठीक नही है। मेरा भारत की मीड़िया से अनुरोध है कि वह भारत की संबृद्ध संस्कृति और और सभ्यता को दिखाये। विहिप के अंतराष्ट्रीय महासचिव श्री चंपत राय ने कहा कि हमारे संत–मुनि, जैसै स्वामी विवेकानंद, आद्यशंकराचार्य, गुरूनानक, स्वामी दयानंद एवं अनेक जैन संतो ने ऐसे ही देशभ्रमण किया और जन–जन से मिल और उनकी पीड़ा को समझा। आज यह काम सीताराम जी ने किया है। केन्द्रीयमंत्री पी– राधाकृष्णन ने कहा कि श्री सीताराम जी ने समाज को जोड़ने का महान कार्य किया है। इस यात्रा ने गांव–गांव लोगों को जाग्रत करने के साथ ही सभ्यता,संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण के लिये युवाओं को सही दिशा देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि जब सीताराम जी ने यात्रा की शुरूआत की थी तब उनके साथ कुछ लोग जुड़े थे और जैसे–जैसे वे आगे चलते रहे उनके साथ अपार जन मानस जुड़ता गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से रा.स्व.संघ के सहसरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले सहित अन्य वरिष्ठअधिकारी उपस्थित रहे।

विश्व मंगल गो ग्रम यात्रा एवं भारत परिक्रमा यात्रा ने समाज में जागरूकता पैदा की है। मैने इस यात्रा में पंचभूत – जल, जंगल, जमीन, जन और पशुओं के संरक्षण के बारे में जागरूकता का प्रयास किया। इस यात्रा से केवल व्यक्तियों ने बल्कि विभिन्न संगठनो और राष्ट्रीय नेताओं ने इन मुद्दों को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया है नतीजन स्वयंसेवक और द्रुतगति से पर्यावरण संरक्षण के कार्यो में जुट गये है। शुरूआत में हमारा ध्यान केवल व्यक्ति निर्माण और संगठन तक ही सीमित था। धीरे–धीरे सेवा क्षेत्र में गतिविधियां शुरू हुई, गांवों_के विकास के लिये काम शुरू हुआ और अब पर्यावरण संरक्षण पर काम हो रहा है।

सीताराम केदिलाय

मिसाल : बच्चों ने बना दिया खेल का मैदान

सरकार की सहायता की बाट जोहने के बदले पाकुड़ के खेल प्रेमियों ने एक ऐसी मिसाल कायम की है जो इलाके के बच्चों के भविष्य में सूनहरा रंग घोल रहा है। दरअसल भवानीपुर पंचायत में एक भी खेल का मैदान नही है। अतः पाकुण्ड के भवानीपुर गांव में युवा श्रमदान कर खेल का मैदान बना रहे है। मैदान को लेकर उनकी योजनाये क्षेत्र के बच्चों के लिये खेल करियर बनाने की दिशा में मददगार साबित हो सकती है। इस मैदान में पंचायत से लेकर प्रखण्ड स्तर की खेलकूद की प्रतियोगिताओं के आयोजन की योजना हुई है। यहां के युवा उक्त मैदान में खेलों का अभ्यास कर राज्य–स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के सपने बुन रहे है। श्रमदान करने वाला युवक मुसर्रफ हुसैन ने कहा,''बच्चों में खेलने की ललक देखता हूँ। ग्राम–सभा में मैदान या स्टैडियम बनाने की चर्चा तक नही होती है, इसलिये गांव वालो के साथा श्रमदान कर मैदान तैयार कर रहा हूं। सरकारी जमीन पर मैदान बनाने के युवाओं ने सदर प्रखण्ड के अंचलाधिकारी से लेकर वरीय पदाअधिकारी तक आवेदन किया परंतु कोई कार्रवाही नही हुई। बरसात में यह स्थान जलमग्न हो जाता है, अतः मिट्टी की मोटी बॉध बनाकर युवा पानी रोकने का प्रयास कर रहे है। प्रखण्ड स्तर पर स्कूली बच्चों के बीच खोलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।''

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । –

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com